विचार बिन्दु

कोई भी भाषा अपने साथ एक संस्कार, एक सोच, एक पहचान और प्रवृत्ति को लेकर चलती है। – भरत प्रसाद

बानी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय

देश में चुनाव आते ही कटु वचनों की बाढ़ सी आ जाती है। कटु वचन एक ऐसे जहर के सामान है जो भले ही पिया न जाये लेकिन वह असर जहर से भी तेजी से करता है। कटु वचन मित्र को भी शत्रु बनाते देर नहीं करता। देश में चुनावों के दौरान कटुता का जैसा सियासी वातावरण बन रहा है वह निश्चय ही हमारी एकता, अखंडता, भाईचारे और सहिष्णुता पर गहरी चोट पहुँचाने वाला है। इसके लिए कौन दोषी है और कौन निर्दोष है उस पर देशवासियों को गहनता से मंथन करने की जरुरत है। जो लोग कटु वचन बोलते हैं और अपने वचनों से अन्य लोगों का मन दुखाते हैं। ऐसे लोगों के लिए रहीम दास जी ने अपने दोहे में बडी सीख दी है। रहीम दास जी ने कहा है, **''बानी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय।''**

देश को अमूमन हर साल कोई न कोई चुनाव का सामना करना ही पड़ता है । जैसे ही चुनाव आते है नेताओं के बांछे खिल जाती है । गंदे और कटु बोलों से चुनावी बिसात बिछ जाती है। पिछले दो दशक से गंदे और विवादित बोल बोले जा रहे है। नेताओं के बयानों से गाहे बगाहे राजनीति की मर्यादाएं भंग होती रहती है। अमर्यादित बयानों की जैसे झड़ी लग जाती है। राजनीति में बयानबाजी का स्तर इस तरह नीचे गिरता जा रहा है उसे देखकर लगता है हमारा लोकतंत्र तार तार हो रहा है।

नेता लोग अक्सर चर्चा में रहने के लिए ऊल-जलूल और समाज में कटुता फैलाने वाले बयान देते रहते है। विशेषकर चुनावों के दौरान गंदे बोलों से चुनावी बिसात बिछ जाती है। कुछ सियासी नेताओं ने तो लगता है विवादित बयानों का ठेका ले रखा है। कई नेताओं पर विवादित बयानों पर मुक़दमे भी दर्ज हुए। कुछ को न्यायालय से सजा भी मिली। मगर इसका उनपर कोई फर्क नहीं पड़ा। विवादित बयानबाजी के कारण सुर्खियों में रहना नेताओं को शायद आनंद देने लगा है। पिछले दो दशक से गंदे और विवादित बोल बोले जा रहे है। नेताओं के बयानों से गाहे बगाहे राजनीति की मर्यादाएं भंग होती रहती है। अमर्यादित बयानों की जैसे झड़ी लग जाती है। राजनीति में बयानबाजी का स्तर इस तरह नीचे गिरता जा रहा है उसे देखकर लगता है हमारा लोकतंत्र तार तार हो रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने भी नफरत फैलाने वाले भाषण को देश के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने को प्रभावित करने वाला गंभीर अपराध करार दिया है। अदालत ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की पुलिस को निर्देश दिया कि वे स्वत: संज्ञान लेकर कार्रवाई करें। शीर्ष अदालत ने कहा कि ऐसे भाषण देने वालों के खिलाफ मामला दर्ज करें, भले ही उनका धर्म कुछ भी हो। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि राज्य सरकारें नफरत भरे भाषणों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए बाध्य हैं।

लोकसभा चुनाव के चलते नेताओं के बीच विवादित बयानबाजी का दौर जारी है। जिस तरह से एक के बाद एक नेता विवादित बयान दे रहे हैं, उसकी वजह से चुनावी माहौल में सरगर्मी बढ़ गई है। विवादित बयान देने में कांग्रेस और भाजपा सहित कोई भी नेता पीछे नहीं है। कहते है राजनीति के हमाम में सब नंगे है। यहाँ तक तो ठीक है मगर यह नंगापन हमाम से निकलकर बाजार में आजाये तो फिर भगवान ही मालिक है। सियासत में विवादास्पद बयान को नेता भले अपने पॉपुलर होने का जरिया मानें, लेकिन ऐसे बयान राजनीति की स्वस्थ परंपरा के लिए ठीक नहीं होते। हमारे माननीय नेता आजकल अक्सर ऐसी भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिससे हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। देश के नामी-गिरामी नेता और मंत्री भी मौके-बेमौके कुछ न कुछ ऐसा बोल ही देते हैं, जिसे सुनकर कान बंद करने का जी करता है।

चुनाव जीतने के लिए वातावरण को कटु और विषैले वचनों से जहरीला बनाया जाता है। फिर चुनाव जीतने के बाद नेता अपनी झोली भरने में लग जाते है। जितने पैसे चुनाव में लगाए है उनके पुनर्भरण की जुगत बैठाते है। गरीब की भलाई के स्थान पर अपने कुनबे को आगे बढ़ाने में लग जाते है। असल में चुनाव ही नेताओं की अग्नि परीक्षा है। जनता को खूब सोच समझ कर अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए अन्यथा पांच साल के लिए फिर भैंस गई पानी में।

भारत सदा सर्वदा से प्यार और मोहब्बत से आगे बढ़ा है। हमारा इतिहास इस बात का गवाह है हमने कभी असहिष्णुता को नहीं अपनाया। हमने सदा सहिष्णुता के मार्ग का अनुसरण कर देश को मजबूत बनाया। सहिष्णुता का अर्थ है सहन करना और असहिष्णुता का अर्थ है सहन न करना। सब लोग जानते हैं कि सहिष्णुता आवश्यक है और चाहते हैं कि सहिष्णुता का विकास हो। सहिष्णुता केवल उपदेश या भाषण देने मात्र से नहीं बढ़ेगी। सहिष्णुता भारतीय जनजीवन का मूलमंत्र है। मगर देखा जा रहा है कि समाज में सहिष्णुता समाप्त होती जा रही है और लोग एक दूसरे के खिलाफ विषाक्त वातावरण बना रहे है जिससे हमारी गौरवशाली परम्पराओं के नष्ट होने का खतरा मंडराने लगा है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए सहनशील होना आवश्यक है। सहनशीलता व्यक्ति को मजबूत बनाती है, जिससे वह बडी से बडी परेशानी का डटकर मुकाबला कर सकता है। अक्सर देखा जाता है हम छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा कर देते हैं, जिससे बात आगे बढ़ जाती है और अनिष्ट भी हो जाता है। ऐसी ही छोटी-छोटी बातों को मुस्कुराते हुए सुनने वाला व्यक्ति ही सहनशील है। सहनशीलता का शब्दिक अर्थ है शरीर और मन की अनुकूलता और प्रतिकूलता को सहन करना।

मानव व्यक्तित्व के विकास और उन्नयन का मुख्य आधार तत्व सहिष्णुता है। स्वयं के विरूद्ध किसी भी आलोचना को स्वीकार नहीं करना मोटे रूप में असहिष्णुता है। सहिष्णुता मनुष्य को दयालु और सहनशील बनाती है वहीं असहिष्णुता मनुष्य को अहंकारी बनाती है। अहंकार अंधकार का मार्ग है जो मनुष्य और समाज का सर्वनाश कर देती है।

आम आदमी से जुडे मुद्दों जैसे बेहतर आधारभूत सुविधाएँ, सामाजिक न्याय, सब के लिए शिक्षा और रोजगार, भ्रष्टाचार से मुक्ति, शासन प्रशासन में पारदर्शिता इत्यादि से देश के हर नागरिक को जूझना ही पडता है। आम आदमी की परेशानियों से किसी को कोई मतलब नहीं है। महंगाई से आम आदमी को जूझना पड़ेगा। चुनाव मे करोडों अरबों की धनराशि स्वाहा हो जाती है। चुनाव लोकतंत्र की परीक्षा होती है और इस परीक्षा में राजनीतिक दलों को यह साबित करना होता है कि जनता के बीच उनकी स्वीकार्यता और लोकप्रियता कितनी है। लोकतंत्र की परीक्षा पास करने के लिए राजनीतिक दल चुनाव में जनता के बीच जाते है। अपने मुद्दे रखते है और बताते है कि चुनाव जीतने के बाद वे जनता की भलाई के लिए क्या कदम उठाएंगे। मगर वास्तविकता इससे ठीक विपरीत है। चुनाव जीतने के लिए वातावरण को कटु और विषैले वचनों से जहरीला बनाया जाता है। फिर चुनाव जीतने के बाद नेता अपनी झोली भरने में लग जाते है। जितने पैसे चुनाव में लगाए है उनके पुनर्भरण की जुगत बैठाते है। गरीब की भलाई के स्थान पर अपने कुनबे को आगे बढाने में लग जाते है। असल में चुनाव ही नेताओं की अग्नि परीक्षा है। जनता को खूब सोच समझ कर अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए अन्यथा पांच साल के लिए फिर भैंस गई पानी में। नेता जाति, धर्म और पैसे की राजनीति से खेलते है मगर मतदाता को इन प्रलोभनों से हट कर अपना मत डालना है। उसे उसी को चुनना है जो उसका सही मददगार है अन्यथा फिर पांच साल पछताना पडेगा और इसके लिए कोई दूसरा दोषी नहीं होगा।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 18 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, आश्लेषा नक्षत्र प्रात: 7:57 तक, गंड योग रात्रि 12:43 तक, गर करण सांय 5:32 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 7:57 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज ज्वालामुखी योग प्रात: 7:57 तक है। रवियोग आज सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज नवरात्रौत्थान्पन, नवरात्र व्रत पारणा और धर्मराज दशमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:39 तक, चर 10:51 से 12:26 तक, लाभ-अमृत 12:26 से 3:37 तक, शुभ 5:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:04, सूर्यास्त 6:49

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
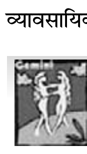

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
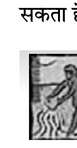

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
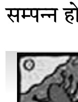

मन में असंतोष बना रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी। धार्मिक स्थान की संभव है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

नरेन्द्र मोदी व सिख समुदाय– एक अनूठा रिश्ता

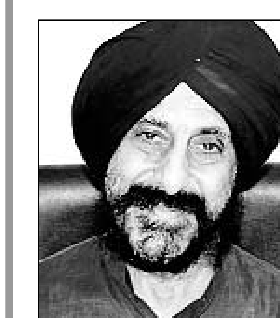

जसबीर सिंह

गत 10 वर्षों के शासन काल में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा एक समावेशी व एकजुट समाज के निर्माण हेतु प्रयास किये गये हैं जिससे एक विकसित व विश्वगुरू भारत के सपने को यथाशीघ्र यथार्थ में बदला जा सके। इस हेतु लालकिले की प्राचीर से 15 अगस्त 2022 में दिये गये पंच प्रणों को यथा 'अमृतकाल' में विकसित भारत, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता व नागरिकों द्वारा अपने कर्त्तव्यों का पालन समाज के सभी वर्गों द्वारा पूरी तरह अपने जीवन में लागू करना आवश्यक है।

श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश की सभी धार्मिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक परम्पराओं के प्रति आदर व गर्व का भाव रहा है जो उनके द्वारा कराये गये कार्यों उद्‌बोधनों में परिलक्षित होता है। इसी कड़ी में सिख समुदाय के प्रति भी उनका संवेदनशीलता व सम्मान का भाव रहा है जिसके दो प्रमुख कारण हैं। पहला, गुरूनानक देवजी से लेकर गुरू गोबिन्द सिंह जी तक सभी दस गुरूओं ने भारत की आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक एकता को एक माला में पिरोने का अद्‌भुत कार्य किया था। सिखों के 11वें गुरू गुरूग्रन्थ साहिब में 6 सिख गुरूओं के साथ-साथ उस समय तक के 30 अन्य महान् संतों यथा कबीर जी, मीरा के गुरू रविदास जी, धन्ना जी, नामदेव जी, शेख फरीद जी, त्रिलोचन जी, पीपा जी आदि की वाणी सम्मिलित है जो देश की अलग-अलग जातियों व क्षेत्रों के थे। प्रत्येक सिख, गुरूओं जैसा ही अदब व सम्मान का भाव इन संतों व महापुरूषों के प्रति रखता है। दूसरा, सिख गुरूओं ने अपने जीवन सहित अपना सब कुछ इस महान् राष्ट्र व धर्मरक्षा हेतु बलिदान व न्यौछावर कर दिया था। उपरोक्त दो कारणों से श्री नरेन्द्र मोदी का सिख गुरूओं के प्रति अगाध श्रद्धा व सम्मान का भाव रहा है। जून 1975 से जनवरी 1977 के आपातकाल के दौर में जब तत्कालीन शासकों द्वारा कवि दुष्यन्त कुमार के शब्दों में पूरे देश को अंधेरी कोठरी में तब्दील कर दिया था उस काल में श्री नरेन्द्र मोदी ने सिख वेशभूषा में ही भय व लोकतंत्र हनन के खिलाफ संघर्ष किया था।

इस नाते वर्तमान प्रधानमंत्री का बपचन से ही सिख समुदाय के प्रति संवेदनशील भाव रहा है जो उनके द्वारा गत 10 वर्षों में किये गये अनेक कार्यों से परिलक्षित होता है।

1984 में सिख विरोधी दंगे व कत्लेआम भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का सबसे काला अध्याय है जिसमें तत्कालीन सरकार की आंखों के सामने देश की राजधानी दिल्ली व अनेक शहरों में दंगे हुये जिनमें हजारों निरपराध सिखों की निर्मम हत्या हुयी। दंगों के बाद 30 वर्षों तक दंगा प्रभावित परिवार न्याय का इंतजार करते रहे। वर्तमान सरकार ने 2014 में आने के बाद स्पेशल इंवेस्टीगेशन टीम (एघ्ऊ) का गठन किया जिससे कई नामी गिरामी व्यक्ति जेलों के सींखचों के पीछे हैं।

करतारपुर साहिब के साथ प्रत्येक सिख का भावनात्मक जुड़ाव है जहाँ पर गुरूनानक देवजी ने अपने जीवन के अन्तिम 22 वर्ष गुजारे थे तथा वहां 'नाम जपो किरत करो वंड छको' के वचन अनुसार खेती करते थे। यह क्षेत्र 1947 के पश्चात् पाकिस्तान में चला गया था व गत कई सरकारों ने सिखों की अनेक अपीलों के बावजूद कोई ठोस पहल नहीं की। वर्तमान केन्द्र सरकार ने ठोस पहल करके करतारपुर कोरिडोर का निर्माण करके देश को समर्पित किया। लाखों श्रद्धालु आज बिना रोक-टोक व पूरी सुविधाओं के साथ करतारपुर साहिब गुरूद्वारे के दर्शन कर रहे हैं।

2016 में सर्वंशदानी साहिबे कमाल गुरू गोबिन्दसिंह जी का 350वाँ प्रकाश पर्व मनाने की घोषणा वर्तमान केन्द्र सरकार द्वारा की गयी व 100 करोड़ रुपये का फण्ड इसके लिये घोषित किया गया। इस राशि में से 4 करोड़ की ग्रान्ट द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय में भी श्री गुरूगोबिन्द सिंह चेयर फॉर नेशनल इंटिग्रेशन एण्ड सिख स्टडीज की स्थापना की गयी। इस 100 करोड़ के फण्ड द्वारा देश के प्रमुख स्थानों पर गुरू गोबिन्द सिंह जी के शौर्य व बलिदान की गाथा को चिरस्थायी बनाया गया जिससे हमारी युवा पीढ़ी निरन्तर प्रेरित होती रहे।

2019 में गुरूनानक देवजी के 550 वाँ प्रकाश पर्व पर केन्द्र सरकार के निर्देशों के परिणामस्वरूप उनकी जीवनी व संदेश पर दुनियां में स्थित सभी भारतीय दूतावासों में आयोजन किये गये जो पहली बार हुआ तथा गुरूनानक देवजी की महिमा व उनके संदेश का गुणगान हुआ। 550वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में केन्द्र सरकार द्वारा अमृतसर विश्वविद्यालय में विश्व स्तर के 'गुरूनानक देव सेन्टर फार इंटरफेथ डायलॉग' की स्थापना की गयी जिसका निर्माण कार्य जारी है। इस बेहतरीन सेन्टर के निर्माण, क्रिया-कलापों हेतु लगभग 400 करोड़ की राशि का व्यय होने की संभावना है। इसी तरह हिन्द की चादर व जनेऊ तथा तिलक की रक्षा हेतु चांदनी चौक दिल्ली में सीसगंज पर अपना बलिदान देने वाले गुरू तेग बहादुर जी का 400वाँ प्रकाशपर्व केन्द्र सरकार की घोषणा के अनुरूप मनाया गया वह उल्लेखनीय है। लाल किले (जहां से 1675 में तत्कालीन शासक द्वारा उनको शहीद करने का आदेश दिया गया था) के परिसर में 400 रागी जत्थों का शबद कीर्तन कराया गया जिसमें वर्तमान प्रधानमंत्री जी स्वयं काफी समय तक मौजूद रहे तथा गुरूजी के बलिदान व शहादत को नमन किया।

हम सभी को मालूम है कि गुरू गोबिन्द सिंह जी ने धर्म व देश की रक्षा के लिये वंदनीय बलिदान दिये थे। उनके दो साहिबजादे युद्ध के मैदान में तथा दो साहिबजादे तत्कालीन शासकों के निर्दयी आदेशों से जिन्दा दीवार में चिनवा दिये गये थे। यह इतिहास आजादी के बाद के शासकों को भी पता था लेकिन पूरी सजगता के साथ वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने ही 26 दिसम्बर को प्रत्येक वर्ष 'वीर बाल दिवस' मनाने की घोषणा की जिससे समाज के युवाओं व बच्चों सहित सभी वर्ग साहिबजादों की शहादत को जाने सकें व नमन कर सकें। सीबीएसई के देश में सभी विद्यालयों में यह दिवस पूरी शिद्दत व अदब के साथ मनाया जा रहा है।

अर्द्धसैनिक बलों जैसे केन्द्रीय इण्डस्ट्रीयल सुरक्षा बल (CISF), 'सीमा सुरक्षा बल' (BSF), 'केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल' (CRPF) जैसी भर्तियों की परीक्षा के लिये गुरूमुखी भाषा में भी परीक्षा देने का निर्देश केन्द्र सरकार द्वारा दिये गये जिससे पंजाब व देश के अन्य भागों में रह रहे पंजाबी भाषी युवाओं को रोजगार व देशसेवा का लाभ मिलेगा।

इसी तरह बद्रीनाथ, केदारनाथ के मार्ग पर सिखों का बहुत बड़ा तीर्थस्थल श्री हेमकुण्ट साहिब है जहाँ पर विशाल संख्या में सिख श्रद्धालु प्रत्येक वर्ष दुर्गम मार्ग से जाते हैं व इस तीर्थ यात्रा में काफी समय लगता है। केन्द्र सरकार लगभग 1200 करोड़ रूपए खर्च करके वहां गोबिन्द घाट से **हेमकुण्ट साहिब** तक रोपवे का निर्माण कर रही है जिससे वहां जाने वालों को बहुत बड़ी सौगात मिल जायेगी। रोपवे बनाने के कार्य का उद्‌घाटन सितम्बर 2022 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया।

अफगानिस्तान, पाकिस्तान व बांग्लादेश से आने वाले शरणार्थी सिखों को देश की नागरिकता देने का काम भी जिसे सी ए ए के माध्यम से वर्तमान केन्द्र सरकार ने किया। अफगानिस्तान में तालिबान का शासन पुन: आने के बाद वहाँ असुरक्षित हो गये श्री गुरूग्रन्थ साहिब को पूरे अदब व मर्यादा के साथ देश में सुरक्षित लेकर आने के लिये विशेष विमानों की व्यवस्था करायी गयी। उनके द्वारा समय-समय पर प्रधानमंत्री निवास पर सिख समुदाय के सभी वर्गों के प्रभावी नेतृत्वकर्ताओं व प्रबुद्धजनों को आमंत्रित किया जाता है तथा संवेदनशील मुद्‌दों व समस्याओं पर खुलकर संवाद किया जाता है जो प्रशंसनीय है।

–जसबीर सिंह,
पूर्व अध्यक्ष राजस्थान अल्प संख्यक आयोग व अध्यक्ष सलाहकार समिति, गुरू गोबिन्द सिंह चेयर फार नेशनल इंटिग्रेशन एण्ड सिख स्टडीज, राजस्थान विश्वविद्यालय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निर्वाचन पर संभावित प्रभाव

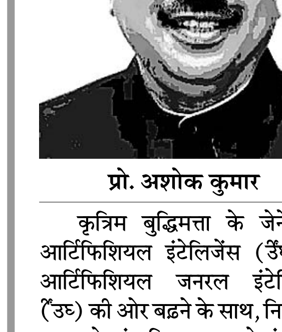

प्रो. अशोक कुमार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जेनेरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ँउ) से आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (ँउघ) की ओर बढ़ने के साथ, निर्वाचन पर इसके संभावित प्रभाव को संबोधित करना महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। निर्वाचन पर इसका प्रभाव, जिसका उदाहरण भारत के आगामी चुनावों से मिलता है, जो इसके संभावित प्रभाव को संबोधित करने की अनिवार्यता को रेखांकित करता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ँघ) चुनावों पर प्रभाव डाल सकता है, निर्णय लेने में मदद कर सकता है, और राजनीतिक प्रक्रिया को परिचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अभियान रणनीति और लक्ष्यीकरण: राजनीतिक दल और उम्मीदवार अपने अभियान संदेशों को अनुकूलित करने तथा विशिष्ट मतदाता समूहों को अधिक प्रभावी ढंग से लक्षित करने के लिये जनसांख्यिकी, सोशल मीडिया गतिविधि एवं पूर्व मतदान व्यवहार सहित मतदाताओं के बारे में अधिक डेटा का विश्लेषण करने के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम का उपयोग कर सकते हैं। पूर्वानुमानित विश्लेषण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित पूर्वानुमानित विश्लेषण मतदान डेटा, आर्थिक संकेतक और सोशल मीडिया से लोगों के रुख का विश्लेषण जैसे विभिन्न कारकों का विश्लेषण करके निर्वाचन परिणामों की पूर्वानुमान लगा सकता है। इससे दलों को रणनीतिक रूप से संसाधन आवंटित करने और प्रमुख चुनाव क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिल सकती है। मतदाता सहभागिता: चैटबॉट व वर्चुअल असिस्टेंट सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मतदाताओं के साथ जुड़ सकते हैं, सवालों के जवाब दे सकते हैं, उम्मीदवारों तथा नीतियों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं तथा यहाँ तक कि मतदाता मतदान को प्रोत्साहित भी कर सकते हैं। इससे मतदाताओं की भागीदारी और चुनावी प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ सकती है। सुरक्षा और अखंडता: मतदाता दमन, इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग सिस्टम के साथ छेड़छाड़ और दुष्प्रचार के प्रसार सहित चुनावी धोखाधडी का पता लगाने तथा रोकने के लिये -संचालित उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। डेटा में पैटर्न और विसंगतियों का विश्लेषण करके एल्गोरिदम चुनावी प्रक्रिया की अखंडता सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं। डेटा विश्लेषण: डेटा को विश्लेषण करके मतदाताओं के विचारों और अभिप्रायों का समर्थन करने में मदद कर सकता है। यह पारंपरिक रूप से संभावित चुनावी परिणामों को पूर्वानुमानित करने में मदद कर सकता है।समाज और मीडिया की निगरानी: सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन स्त्रोतों को मॉनिटर करके व्यक्तियों के विचारों, अभिप्रायों, और रुझानों का अध्ययन कर सकता है। इससे राजनीतिक मुद्दों और ट्रेंडों का पता लगाना और उसका विश्लेषण करना संभव होता है। चुनावी योजना और संगठन: राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को चुनावी योजनाओं को अनुकूलित करने में मदद कर सकता है। यह डेटा विश्लेषण, चुनावी प्रचार, और मतगणना में सहायक हो सकता है। मतदान की सुविधा: मतदान प्रक्रिया को सुधारने और इसे अधिक उपयोगी और अधिक सुरक्षित बनाने में मदद कर सकता है। इसमें वोटर आईडेंटिटी की प्रमाणित करने, वोटिंग के लिए आवश्यक दस्तावेज़ों को जांचने, और वोटिंग प्रक्रिया को सुरक्षित रखने जैसे काम शामिल हो सकते हैं। लेकिन, का इस प्रकार का प्रयोग भी निरंतर विवाद का विषय रहता है। कुछ लोग इसे निजी और सामाजिक न्याय के मामलों में हस्तक्षेप करने का संदेश देते हैं। इसलिए, अधिकांश राष्ट्रों में के उपयोग के लिए सख्त नियम और नियंत्रण होते हैं।

का उपयोग मतदान प्रक्रिया को सुधारने और सुरक्षित बनाने में कई तरीकों से किया जा सकता है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण कदम हैं: वोटर आईडेंटिटी की प्रमाणित करना: सुरक्षित बायोमेट्रिक्स तकनीकों का उपयोग करके वोटरों की पहचान को सुनिश्चित कर सकता है, जैसे कि आईरिस स्कैनिंग या फेस रिकग्निशन। यह गलत या अनुचित वोटिंग को रोक सकता है। सिस्टम में डिजिटल सुरक्षा को मजबूत करना: सिस्टमों को हैकिंग और अनधिकृत पहुंच से बचाने में मदद कर सकता है। इसमें डेटा एन्क्रिप्शन, साइबर सिक्योरिटी सॉफ़्टवेयर, और एंटी-फिशिंग तकनीकों का उपयोग शामिल हो सकता है।डेटा एनालिटिक्स का उपयोग: विश्लेषण क्षमताओं का उपयोग करके वोटरों के अभिप्रायों का विश्लेषण कर सकता है, जिससे राजनीतिक दल और चुनावी अधिकारी वोटरों के मुद्दों और आवश्यकताओं को समझ सकते हैं। वोटिंग प्रक्रिया में ऑटोमेशन: वोटिंग प्रक्रिया को ऑटोमेट करके मतदान की सुविधा बढ़ा सकता है। इसमें स्वचालित वोटिंग मशीनों और इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग के तंत्रों का उपयोग शामिल हो सकता है। वोटिंग प्रक्रिया में नेतृत्व: राजनीतिक प्रशासन और वोटिंग प्रक्रिया में नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है, जिससे सुनिश्चित हो सकता है कि प्रक्रिया संवेदनशील और निष्पक्ष हो।

ये सभी कदम मिलकर मतदान प्रक्रिया को सुरक्षित, सुविधाजनक, और निष्पक्ष बनाने में मदद कर सकते हैं। लेकिन, इस प्रकार की प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से पहले नियमों, नियंत्रणों, और गोपनीयता के मामले पर विचार किया जाना चाहिए

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय

भ्रमित और बिखरे हुए विपक्ष का हारा हुआ चुनाव

सुरेन्द्र चतुर्वेदी, जयपुर

2024 के आम चुनाव प्रारम्भ होने वाले हैं, पहले चरण का चुनाव 19 अप्रेल को होगा और अब जबकि मतदान होने में तीन दिन बाकी बचे हैं, भाजपा के विपक्षी दल मतदाताओं को यह बता पाने में विफल रहे हैं कि उन्हें वोट क्यों दिया जाए और भाजपा को क्यों नहीं ? दस साल सत्ता से बाहर रहने के बाद भी ये दल भाजपा के खिलाफ एक वैकल्पिक नेतृत्व और कार्ययोजना तक नहीं बना सके। इससे तो यह ही सिद्ध हो रहा है कि विपक्ष सिर्फ खानापूर्ति के लिए ही चुनाव मैदान में है।

इन चुनावों का सबसे मजेदार और रोचक तथ्य यह है कि कथित इंडिया एलांयस में जितने भी दल हैं, सबके अपने अपने घोषणा पत्र हैं। सबकी अपनी अपनी दुनिया है, सबके अपने-अपने सपने और वादे हैं। ऐसा कहीं से नहीं लगता कि विपक्ष एकजुट है और वो भाजपा सरकार के कामकाज के विरोध में एक मजबूत कार्ययोजना को मतदाता के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। वे केवल जातीय वैमनस्यतायुक्त समीकरण, मुस्लिम वोट बैंक के तुष्टिकरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आलोचना, विदेशों में बैठे भारत विरोधियों की मदद और जांच ऐजेसियों की भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ की जा रही कार्यवाही के विरोध में जनता से वोट मांगने जा रहे हैं। इसमें एक रोचक तथ्य यह भी है कि इंडिया एलाएंस अपनी कमजोरी, बौनेपन और नाकामी का श्रेय भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देते हुए आरोपित कर रहे हैं कि उनके कारण विपक्ष सशक्त नहीं हो पा रहा है।

हां, एक बात जरूर है कि ये सभी दल भारत के मुस्लिम मतदाताओं पर निर्भर हैं, उनका यह मानना है कि भारत के मुस्लिम मतदाता किसी भी और कैसी भी हालत में भारतीय जनता पार्टी के विरोध में उनको ही अपना वोट देंगें। इसी लालच में इन दलों में ना केवल सनातन धर्म परम्परा का मजाक उडाया है अपितु राम जन्मभूमि पर बने मंदिर के लोकार्पण में जाने से भी मना कर दिया।

यह भी रोचक तथ्य है कि भाजपा के दस साल के राज से सर्वाधिक दुखी और त्रस्त कांग्रेस जो स्वयंभू रूप से इस विपक्षी एकजुटता का नेतृत्व कर रही है, वो स्वय भारत के इतिहास में सबसे कम सीटों पर चुनाव लड़ रही है। भारत की संसद में बहुमत के लिए 272 का आंकड़ा जरूरी है और कांग्रेस 278 सीटों पर ही चुनाव लड़ रही है। केवल इसी एक तथ्य से समझा जा सकता है कि भाजपा को सत्ता से बाहर कर देने की विपक्ष की इच्छा कितनी बलवती और प्रभावी है? इसमें भी विचार करने लायक तथ्य यह है कि उत्तर प्रदेश (80), बिहार (40), पश्चिम बंगाल (42), तमिलनाडू (39) और महाराष्ट्र (48) की 249 सीटों पर कांग्रेस सिर्फ 65 सीटों पर ही चुनाव लड़ रही है। तो क्या कांग्रेस की इस स्थिति को सहयोगी दलों के लिए उसका समर्पण माना जा सकता है? या ये स्थिति यह बता रही है कि कांग्रेस की राजनीतिक जमीन इन राज्यों में खत्म होने की ओर है और यह संभव है कि अगले लोकसभा चुनावों में कांग्रेस इस स्थिति में भी नहीं रहेगी कि उसे कोई अन्य राजनीतिक दल अपने बड़े और प्रभावी राजनीतिक साझीदार के रूप में स्वीकार करे।

राजस्थान जैसे राज्य में जहां कांग्रेस चार महिने पहले तक सत्ता में थी वहां उन्होंने तीन सीटें सीकर, नागौर और बांसवाड़ा समझौते में अन्य दलों को दे दी। इसका अर्थ यह है कि कांग्रेस में वह नैतिक साहस भी नहीं बचा है कि जहां वह अपने बूते चुनाव लड़ सकती थी, वहां पूरी ताकत के साथ चुनाव लड़ती। तो एक नैतिक रूप से पलायन कर चुके विपक्ष के सामने यदि भारतीय जनता पार्टी 370 और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन 400 से अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य रखता है तो इसमें किसी आश्चर्य की बात करना राजनीतिक रूप से नासमझी ही कहा जाएगा।

समस्या यह है कि वर्तमान विपक्ष मोदी सरकार की सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की आलोचना भले ही कर ले, पर वो मोदी सरकार को दागदार बता पाने में विफल रहा है। राफेल से लेकर इलैक्ट्रॉल बांड तक जितने भी मुद्दों को लेकर विपक्ष हमलावर हुआ है, वे सब विपक्ष के लिए ही नुकसानदेह साबित हुए हैं। इससे जनता में मोदी सरकार के प्रति ही विश्वास में बढ़ोतरी हुई है।

विपक्ष की यह स्थिति तब तक रहेगी, जब तक अन्य विपक्षी दल कांग्रेस से और कांग्रेस अंतत: गांधी परिवार से अपने आपको मुक्त नहीं कर लेती। असल में गांधी परिवार युक्त कांग्रेस एक अघोषित राजवंश में चापलूसों, राग दरबारियों और षडयंत्रकारियों का समूह भर है, जो बिना सत्ता के रह नहीं पा रहा और उसको किसी भी हालत में सत्ता में वापसी चाहिए। लेकिन उस राजवंश में उन लोगों का कोई स्थान नहीं है, जो राजनीतिक रूप से योग्य और समझदार हों। जो जनता की संवेदनाओं के साथ एकात्म हों। भारतीय राजनीति का यह दौर नए और प्रभावी नेतृत्व के उभार का है। जनता हर उस नेता को मान सम्मान देने के लिए आतुर है, जो उनके बीच का है, उन जैसा है और उनको समझता है। चाहे वो रेवंत रेडडी हों, के अन्नामलाई हों, सचिन पायलेट हों या हेमंत विश्व सरमा ।

यह लेखक के अपने निजी विचार हैं।

–सुरेन्द्र चतुर्वेदी, जयपुर,
सेंटर फॉर मीडिया रिसर्च एंड डवलपमेंट

फगड़ा घुड़ला का मेला आज

जोधपुर, (कासं)। फगड़ा घुड़ला कमेटी सिटी पुलिस के तत्वावधान में 18 अप्रैल को भोळावणी के दिन फगडा घुड़ला मेला निकाला जाएगा। कमेटी के अध्यक्ष भगवतीलाल शर्मा व सचिव रमेश गांधी ने बताया कि पूर्व की भांति इस बार भी मेला 18 अप्रैल को ओलंपिक रोड से रवाना होकर जालोरी गेट, पुष्टिकर स्कूल, खाण्डा फलसा, आडा बाजार, डागा बाजार, सर्राफा बाजार, मिर्ची बाजार, कपड़ा बाजार, सिटी पुलिस, कटला बाजार होते हुए देर रात्रि में घंटाघर पर विसर्जित होगा। मेले का मुख्य आकर्षण सबसे पीछे कमेटी सदस्य शलील गायन करते हुए चलेंगे तथा घुड़ला स्त्री के वेश में गहनों से लकदक श्रृंगार करके पुरुष बीच में चलेगा। देर रात्रि में तूरजी के झालरे में घुड़ला विसर्जित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि केवल जोधपुर शहर में गत 57 वर्षो से फगड़ा घुड़ला कमेटी के तत्वावधान में प्रति वर्ष फगड़ा घुड़ला मेला शहर के भीतरी भागों में निकाला जाता रहा है। इस मेले में लोग विभिन्न स्वांग रचकर ट्रैक्टर, जीप, घोड़े व पैदल चलेंगे। साथ ही बैण्ड बाजे विभिन्न गानों पर अपनी स्वर लहरियां बिखेरते हुए साथ चलेंगे।